

an>

Title: Need to reduce the weight of school bags.

डॉ. वीरिन्द्र कुमार (टीकमगढ़) : देश के नौनिहालों की पीठ पर किताबों के भारी बोझ वाला बस्ता उनके स्वास्थ्य पर खराब असर डालने के कारण चर्चा का विषय बना रहा है। हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण ने इस तथ्य को और पुख्ता कर दिया है, जिसमें कहा गया है कि भारी बस्ता ढोने वाले 7 से 13 वर्ष की आयु वर्ग के 68 प्रतिशत स्कूली बच्चों को पीठ दर्द की शिकायत हो सकती है।

एसोसिएटिड चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स की स्वास्थ्य देखभाल समिति के तहत कराए गए हालिया सर्वेक्षण में यह पाया गया है कि 7 से 13 वर्ष की आयु वर्ग के 88 प्रतिशत छात्र अपनी पीठ पर अपने वजन के 45 प्रतिशत से अधिक भार ढोते हैं, जिनमें क्रिकेट किट, आर्ट किट, स्केट्स, तार्डवांडो तथा तैराकी से संबंधित सामान आदि शामिल हैं, जिससे उनकी शरीर की हड्डी को गंभीर नुकसान हो सकता है और पीठ संबंधी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। इन बच्चों को स्लिप डिस्क, स्पांडलाइटिस, पीठ में लगातार दर्द, शरीर की हड्डी के कमजोर होने और कूबड़ निकलने की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। सर्वेक्षण के दौरान अधिकतर अभिभावकों ने शिकायत की कि उनके बच्चे दिन में औसतन 20 से 22 किताबें और 7 से 8 पीरियड की कॉपियां लेकर जाते हैं।

बाल स्कूली बस्ता अधिनियम-2006 के अनुसार स्कूल के बस्ते का वजन बच्चे का वजन के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए, क्योंकि बस्ते के वजन को ढोते-ढोते बच्चा मानसिक रूप से थक सकता है तथा उसकी पढ़ाई पर विपरीत असर पड़ सकता है।

इस संबंध में सरकार से गैर आग्रह है कि वह स्कूल के प्राधिकाशियों को बस्तों के संबंध में जरूरी दिशा-निर्देश जारी करें तथा अभिभावकों को भी इस बारे में जागरूक करने हेतु तत्काल ठोस कदम उठाए।